भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-8, अंक : 11-12	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
मंगलवार, 31-12 दिसं.'85	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी

गुणातीत द्विशताब्दी मनाने का भव्य अवसर नजदीक आ रहा है। गुणातीत पुरुष भी अपने यदि सद्गुरु के प्रति भक्ति अदा करने में खूब उमंग उत्साह से एक आदर्श रखने के लिये तत्पर हैं। तो हमारी फर्ज भी मन, इन्द्रियाँ, अन्तःकरण की Negative Thinking को छोड़कर total गुणातीत पुरुषों में समर्पित हो जाने की है। समर्पण में ही जीत है और सत्पुरुषों की अन्तर की प्रसन्नता भी इसी में है।

आप सभी को ज्ञात है कि आजकल भगवत्कृपा में हम मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी की साधुता, प्रभुधारकता, भक्तवत्सलता, सेवाभावना आदि दिव्य प्रसंगों के बारे में चर्चा कर रहे है....जिससे हमारे जीवन में अक्षरधाम का सुख, शान्ति, आनन्द प्रकट हो। हमारी इन्द्रियाँ अन्तःकरण का प्रवाह मनसन्मुख नहीं, बल्कि प्रभुसन्मुख हो। गुणातीतानन्दस्वामी की निगाह केवल महाराज की ओर थी। निर्मिनेष महाराज की ओर निहारना....उनकी बातों को एकदम वर्तन में लाकर गुणातीतानन्द स्वामी ने आदर्श स्थापित किया। निम्न प्रसंग उनके महाराज के वचन में अटूट निष्ठा को स्पष्ट करता है।

महाराज के उपदेश में एक बात अक्सर हुआ करती थी कि मलीन देवी-देवताओं, जंतर-मंतर, डोरा-धागा, जादू-टोना ऐसी फालतू चीजों में पड़ना नहीं। एकमात्र भगवान का ही आसरा पक्का रखना। गुणातीतानन्दस्वामी ने यह बात बराबर पकड़कर रखी थी।

एक बार मूलजी भक्त (गुणातीतानन्दस्वामी का पूर्वाश्रम का नाम मूलजी भक्त था) ने अपने खेतों में गन्नों की उतराई की। उसी समय स्वयं को देवी का भक्त कहने वाला एक बाबा अपने चेलों के साथ खेत पर आया और मूलजी से गुड़ की दो कढ़ाई मांगीं। मूलजी ने कहा सब एक ही कढ़ाई गुड़ देते हैं तो हम दो क्यों देवे? तो बाबा

बोला कि चुपचाप दे दो नहीं तो तुम्हारा सारा खेत जला दूँगा। मूलजी ने स्पष्ट कह दिया कि लेना हो तो एक ले लो वरन् रास्ता सीधा पड़ा है, आप जा सकते हैं। बाबा मूलजी की बात सुनकर क्रोध की आग में जलने लगा और आखिर में बोला कि तुम्हें मालूम है कि मैं देवी का भक्त हूं; तुम्हारा सारा खेत जला दूँगा। मूलजी ने तो तब भी शांति से कहा कि बाबाजी आपकी बड़ाई यहाँ नही चलेगी। आप देवी के भक्त हो तो मैं भी देवी के देव का भक्त हूँ। अगर तुझे जलाना आता है तो मुझे बुझाना आता है। इसलिए झूठी बड़ाई छोड़कर एक कढ़ाई गुड़ लेकर जाना है, तो ले जाओ नहीं तो चलते बनो। जिस प्रकार महाराज ने वनविचरण के दौरान पिबेक को सिखाया था वैसे ही मूलजी ने बाबाजी को पकड़ा। बाबा अपमान की पीड़ा से तिलमिला कर गुस्से में आकर अपने कमण्डल में से पानी लेकर मन्त्र पढ़कर कर छाँटने लगे। मूलजी भक्त के साथीदार तो घबराने लगे कि कहीं बाबा कुछ कर न दें। पर मूलजी को पूर्ण पुरुषोत्तम सहजानन्द का अनन्य आसरा था, सो उन्होंने अपने साथीदारों से कहा कि तुम घबराना नहीं, इससे कुछ होगा नहीं। बाबाजी के पानी छिड़कने का जब कोई परिणाम नहीं आया तो बाबा मन ही मन घबड़ाया। मन में मूलजी भक्त की महिमा की छाप पड़ गई। परन्तु वह पराजय स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुआ।

रात को बाबा ने देवी की उपासना की तो देवी ने दर्शन देकर कहा कि 'अरे मूर्ख ! तू कहां आ पड़ा? वह तो साक्षात् अक्षरब्रह्म का अवतार है उसके आगे तेरे जैसे पतंगे का और मेरा कुछ चलने वाला नहीं है। सुबह ही मूलजी भक्त के पांव छूकर और वो जो देवे वो लेकर चले जाना।' बाबा तो देवी की यह बात सुनकर किंकर्तव्यविमूढ़ रह गया। बाबा के पास खुद का तो कोई बल था नहीं, जो कुछ बल था वह देवी का ही था। परन्तु जब देवी भी मूलजी भक्त की शक्ति के पास लाचार बन गई तो फिर और कोई उपाय तो चलने वाला नहीं। बाबा को अन्तर में पश्चाताप होने लगा। वह प्रातःकाल की प्रतीक्षा में सारी रात बैठा ही रहा। सुबह होते ही बाबा मूलजी के पास गया और मूलजी को प्रणाम करके क्षमा मांगी। पश्चाताप से परिवर्तित हुए बाबा के हृदय को देखकर मूलजी भक्त प्रसन्न हुए और राजी होकर दो कढ़ाई ही गुड़ दिया!

प्रकट प्रभु के आश्रित को जंतर-मंतर, जादू, टोना छू सकता नहीं। काल, कर्म, माया का बंधन भी उसे बांध सकता नहीं। ऐसा संबंध होने के बाद फिर चिन्ता क्यों? भजन करते-करते समर्थ सारथी की सेरे छाया में आनन्द में रहना है।

दूसरा ऐसा ही प्रसंग जो स्पष्ट करता है कि मूलजी भक्त को महाराज के प्रति अगाध प्रेम, दृढ़ निष्ठा तो थी ही, साथ ही महाराज के वचन को नीचे नहीं गिरने देते थे अधर ही झेल लेते थे। जैसे चातक पक्षी वर्षा की बूंद आने की राह देखता रहता है वैसे ही मूलजी महाराज की ओर टुक-टुक निहारा ही करते थे।

मूलजी भक्त एक बार रात को खेतों में पानी दे रहे थे। उस समय श्रीजी महाराज ने प्रत्यक्ष दर्शन दिये। महाराज ने पीला पीताम्बर पहना था। मूलजी भक्त को महाराज ने कहा 'हम क्या करने आये हैं? और क्या हो रहा है? जगत में

ब्रह्मतेज तो बिल्कुल सूख गया है इसलिए आप निकल पड़ो....समय पूरा हो गया।' महाराज की आज्ञा सुनकर मूलजी ने तुरन्त फावड़ा फैंक दिया और अपने घर भी कहने नहीं गये; सीधे गढ़पूर महाराज के पास चल पड़े। श्रीजी महाराज दो दिन बाद गढ़पुर आये। महाराज मूलजी को गढ़पुर में देखकर खूब राजी हुए। पर पीछे-पीछे घर से मूलजी के छोटे भाई सुंदरजी मूलजी को ढूंढते-ढूंढते गढ़पूर आ गये। और भाई को देखकर रो पड़े। तो महाराज ने मूलजी से कहा कि अभी घर जाओ और सबके मन को शान्त करके फिर आना।

मूलजी वापस घर गये, पर संसार से उनका मन उदासीन था और श्रीजी महाराज का आदेश भी था कि जगत में से अदृश्य हो गये ब्रह्मतेज को प्रज्जवलित करना है। आत्यंतिक कल्याण की ज्योति को अखंडित जलाये रखने हेतु एवं एकांतिक धर्म को प्रस्थापित करने हेतु महाराज धरती पर ही पधारे थे। इस महान कार्य में अविरत प्रयत्नशील रहना था। मूलजी के मन में इस प्रकार का विचार मंथन होन से घर की छाया उन्हें जलाने जैसी लगी। फिर भादरा में सबका मन शान्त करके महाराज के पास पंचाला पहुँच गये। महाराज अपने अनादि सेवक अक्षर ब्रह्म को देखकर अत्यंत राजी हुए। महाराज की प्रसन्नता देखकर मूलजी ने निश्चित कर लिया कि अब खाली समय गंवाना व्यर्थ है। इसलिए मूलजी ने महाराज को हाथ जोड़कर कहा 'महाराज ! अब आप मुझे दीक्षा देकर अपनी सेवा में रखो।' महाराज मूलजी को यथार्थ पहचानते भी थे पर फिर भी जगत में एक आदर्श रखने के लिए उन्होंने मूलजी को कहा 'भले, तुम्हें साधु तो करेंगे परन्तु तुम कुटुम्ब को जलाकर आये हो? महाराज का अभिप्राय यह था कि जगत व मन की झोंपड़ी को जलाकर आए हो? मूलजी ने भोलेपन व सरल प्रकृति से जवाब दिया 'महाराज ! कुटुंब तो अभी बाकी है। तब महाराज ने कहा 'तो जाओ, सब जलाकर आओ।' महाराज की आज्ञा सुनकर मूलजी भक्त तुरन्त उठकर सीधे भादरा की ओर चल पड़े ! दीक्षा लेने में एक क्षण की देर सहन न होने के कारण पांव खूब वेग से चला रहे थे।

मूलजी के जाने के बाद सद्. मुक्तानन्दस्वामी ने महाराज को कहा कि महाराज मूलजी तो सरल हृदय का है, सो वह आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए सबको जलाकर ही आयेगा। यह सुनकर महाराज हंसे और कहा कि हां वह तो ऐसा ही है उसे वापस बुलाने किसी को भेजो।

एक साधु को मूलजी को वापस बुलाने भेजा। वो मूलजी को वापस बुलाकर लाये। तब महाराज ने कहा कि घर जाने की जरूरत नहीं, आपको दीक्षा देंगे। फिर सद्. मुक्तानन्दस्वामी ने मूलजी को कहा कि मूलजी महाराज ने आपको वैसे कुटुंब जलाने की आज्ञा नहीं करी थी बल्कि अन्तर से जलाने कहा था...यह सुनकर मूलजी हँसे और कहा कि ''अन्तर में तो महाराज के सिवा दूसरा कुछ है ही नहीं जिसे जलाना पड़े।''

कैसी गुरु के प्रति सरलता, अचल निष्ठा ! ऐसे साक्षात् महाप्रभु सहजानन्द और सच्चे वारिसदार गुणातीत स्वरूपों को हमारे करोड़ों वंदन.....

नूतन वर्ष 13th Nov. से प्रारम्भ हो गया.... हम सब भी इन गुणातीत सत्पुरुषों को अपनी मनमानी छोड़कर सच्चे हृदय से समर्पित हो जाएँ, उनकी योजना में सहायरूप होवें....भूतकाल अर्थात् बीते वर्ष को सदन्तर भूलकर हमें जो भव्य प्राप्ति हुई है उसमें ही आनन्दमग्न रहें...प.पू. काकाजी की परावाणी में:–

आप किसके हो?

प्रगट प्रभु के।

वे प्रभु कैसे?

पल में चाहें सो कर दें।

फिर चिन्ता क्यों? उदासी क्यों?

हमें तो रोज दीवाली,

मौज करो ! आनन्द करो !

तो अब अपनी मान्यता से बनाये पुराने ढांचे को पूर्णतया तोड़कर अपनी देह और आत्मा को मन्दिर बनायें....चिन्ता नहीं, चिन्तन करें यही नूतन वर्ष पर प्रत्यक्ष प्रभुस्वरूपों के चरणों में अन्तर की अभीप्सा !

❋ ❋ ❋

साकार ब्रह्म की अमृतवर्षा

प्रकट ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी विदेशों की धर्म कल्याण यात्रा पूर्ण करके 26th Oct. की सुबह स्वदेश लौट आए। विदेशों में लगभग तीन महीने का विचरण किया। अल्प संबंध में आये हुए को भी मोक्ष की मौज देने वाले ऐसे करुणासागर का ऋण हम कैसे चुका भी पायेंगे?

विदेश से लौटते ही प.पू. काकाजी ने सर्वप्रथम उत्तर भारत के ही भक्तों की प्रार्थना स्वीकार की। लगभग ढाई वर्ष के पश्चात् उन्होंने पंजाब का छः दिन का कार्यक्रम बनाया। हम सभी जानते हैं कि पिछले दो ढाई वर्ष से पंजाब खूब दंगे फंसाद, अराजकता, अशान्ति की विषम परिस्थितियों के दौर से गुजर रहा था। वर्तमान से डरे हुए, भविष्य की चिन्ता से ग्रसित दुःखी व्यथित अपने भक्तों के हृदय को दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देकर अक्षरधाम का सुख, शान्ति आनन्द प्रगटाने प्रभु स्वरूप प.पू. काकाजी स्वयं वहां पहुँचे।

प.पू. काकाजी 30th Nov. की सुबह लगभग साढ़े चार बजे लुधियाना पहुँचे। प.पू. काकाजी से आत्मीयता से जुड़े पंजाब के हरिभक्तों के आनन्द की सीमा का पार नहीं था। विदेश में गये वर्षों से बिछड़ा कोई अपना सगा संबंधी जब स्वदेश लौटकर आता है तो जो खुशी की झलकती आभा चेहरे पर दिखाई पड़ती है, ठीक वैसी ही पंजाब के इन हरिभक्तों के मुंह पर थी। अत्याधिक खुशी के कारण पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। भक्तों की दृष्टि बस अपने जीवन प्राणदाता की ओर निर्मिनेष निहार रही थी.... प.पू. ककाजी अपने प्रिय मित्र जैसे माने हुए लुधियाना में श्री राजकुमार बाम्बा साहेब के यहां रुके। बाम्बा साहेब, सौ. इन्दिराजी, उनके बहू बेटे की प.पू. काकाजी, संतों व हरिभक्तों के प्रति सेवा भावना देखते ही बनती थी। किसी के माथे पर थोड़ी भी शिकन नहीं....केवल अहोभाव ! लुधियाना में ही प.भ. चोपड़ाजी, प.भ. केवल किशनजी, प.भ.कमल खुराना, प.भ. गुरुबक्शजी, प.भ. सतपालसिंहजी, प.भ. प्यारेलालजी, प.भ. अमृतसागरजी, विनोद आदि हरिभक्तों ने खूब परिश्रम से मिलजुल कर अपने दिल के आनन्द के उद्‌गार व्यक्त करने प.पू. काकाजी, पू. महेन्द्रबापू का विदेश से लौटने का स्वागत समारंभ रखा था। एक ओर हरिभक्तों की भावना थी और दूसरी ओर प.पू. काकाजी के प्रेम की आशीष वर्षा नयागरा फाल के निश्चल धोध की तरह अविरत बहती दिखाई पड़ती थी। प.पू. काकाजी की सौम्य मूर्ति सहज ही मन में बसा लेने की चाह हरेक को थी।

प.भ. बाम्बा साहेब ने प.पू. काकाजी को हार अर्पण करके उनके पंजाब आने पर हार्दिक स्वागत किया और प.पू. चोपड़ाजी, प.भ. कमल, प.भ. सरदार गुरुबक्शजी, प.भ. सतपालजी, झमट के नम्बरदारजी आदि हरिभक्तों ने भी प.पू. काकाजी के पंजाब पधारने पर अत्यधिक आनन्द व्यक्त किया व आशीर्वाद की याचना की। इसके पश्चात पू. महेन्द्र बापू जो कि छ- महीने से विदेश में ही थे अपने अनुभव व अमेरिका, कनाडा, U.K. के हरिभक्तों के अनुभवों को सुनाया। अन्त में प.पू. काकाजी ने आशीष प्रदान करते हुए कहा 'आप सब अपना दुःख तकलीफ मुझे दे दो और प्रभु की ही स्मृति– चाहे किसी को भी अपना ईष्टदेव मानो पर पक्का भरोसा तो रखो। संदेह मत करो। दिल की सच्चाई से सुबह और शाम को पंद्रह-पंद्रह मिनट प्रार्थना और रात को प्रायश्चितरूप प्रार्थना तो जरूर करो ही। प्रभु स्वयं दौड़कर रक्षा के लिए आयेंगे। संत तो माँ जैसा है, बालक जैसे अतिशय अज्ञानी बनकर, निर्दोष भाव से मम्मा-मम्मी पुकार करो तो मां दौड़कर आयेगी। जैसी रक्षा प्रह्लाद, मीरा, काकाजी की हुई थी वैसी ही रक्षा आपकी भी होगी। सर्वदा सुखी रहने, रक्षा का अभयदान देकर उन्होंने आशीष प्रदान किया।

1st दिसम्बर की सुबह लगभग 9-30 बजे प.पू. काकाजी जगराव पहुँचे। जगरांव में दो दिन की शिविर पहले ही निश्चित थी। जगरांव के हरिभक्तों में अत्यधिक आनन्द, उमंग व उत्साह था क्योंकि प.पू. काकाजी के दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य लाभ पूरे दो दिन मिलने वाला था। जगरांव में बाबू शिवप्रसाद जी, प.भ. प्यारेलाल बजाज, प.भ. रमेश मल्होत्रा, प.भ. पंडित बलवन्तसिंह जी, प.भ. सुरेशजी, प.भ. झाँझी साहब, प.भ. श्यामलाल शर्मा जी, प.भ. दर्शनलाल जैन, प.भ. शास्त्री जी, प.भ. अनिल कतियाल, प.भ. बैजनाथ परिवार, प.भ. महेन्द्र जयस्वाल, प.भ. विपिन कटारिया आदि हरिभक्तों की सेवा भावना देखते ही बनती थी। अपने प्रभु के प्रति कैसी भक्ति अदा करके उसे राजी कर लें–बस यही चाहना हरेक के चेहरे पर दिखाई पड़ती थी। जगरांव में मण्डी में बने शिव मन्दिर के हॉल में दिसम्बर की सुबह 10.00 बजे सत्संग सभा का आयोजन था। हरिभक्तों की भीड़ प.पू. काकाजी के आने से पूर्व ही सभा हाल में बड़ी व्यग्रता से राह देख रही थी। बम्बई से आए प.भ . रमेशभाई सोनी ने मंगलाचरण श्लोक आरंभ ही किए थे कि प.पू. काकाजी सभा मंडप मे पधारे। 'काकाजी महाराज की जय' का जोर से तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उद्घोष हुआ, फिर सभी ने अपना स्थान ग्रहण किया। प.भ. बाबू शिवप्रसादजी, प.भ. रमेश मल्होत्रा, प.भ. शास्त्रीजी आदि हरिभक्तों ने प.पू. काकाजी के जगरांव पधारने पर दिल से आभार व्यक्त किया और प्रार्थना की कि प.पू. काकाजी पंजाब अधिक से अधिक आने की कृपा करें। हरिभक्तों के चेहरों से ऐसा लगता था मानो वह ढ़ाई वर्ष से दबी अपने अन्दर की सभी समस्याओं को प.पू. काकाजी के पास रख देखना चाहते हों। दिल्ली से संत मंडल एवं प.भ. दालिया साहब, प.भ.पटेल साहब, प.भ. वच्छराज भाई व बहनें भी पंजाब प.पू. काकाजी के साथ आई थीं। पंजाब के हरिभक्तों ने खूब अहोभाव से इन सभी की सेवा करके राजी खूब कर लिया।

जगरांव में प.पू. काकाजी ने तीन-चार सभाएं कीं व सभी हरिभक्तों की सेवा, उमंग, उत्साह,

भावना देखकर खूब राजी हुए....खूब आशीर्वाद बरसाये। प.पू. काकाजी ने अपने प्रवचन में कहा कि आप सब केवल सद्भाव रखो इतने में ही आपका कल्याण होगा और अन्तकाल में प्रभु आपको लेने आयेंगे यह मेरे प्रभु का वरदान है। संत तो सूर्य समान है उसे कोई भेदभाव नहीं। महाराज ने वेश्या का भी कल्याण किया तो तुम्हारा क्यों नहीं करेंगे? प.पू. काकाजी ने सभी को सर्वदा सुखी होने के लिए दो नियम बार-बार दोहराये।

दो साथी मित्रों के साथ मैत्री रखना। दूसरा पूरे दिन में दो-दो घंटे के बाद 7-7, मिनिट की धून्य करने पर अत्यधिक जोर दिया ताकि सारा दिन अनुसंधान रहे कि हम प्रभु के हैं। साथ ही आशीर्वाद भी दे दिये कि यह दो नियम जो भी Sincerely पालेगा उसकी सारी जिम्मेदारी मेरी है। प.पू. काकाजी ने कहा कि यह दो नियम पालने वाले का।

1. व्यवहार सुधर जायेगा।
2. स्वभाव बदल जायेगा और
3. अन्तर से आनन्द के फव्वारे छूटेगे। कैसी चिन्तामणि की अपने भक्तों को अनुपम मौज बक्शीश दे दी? प.पू. काकाजी ने यहाँ तक कह दिया कि अभी तक का आपके सब गुनाह माफ। पर अब नया प्रारब्ध मत खड़ा करो। एक बात उनके प्रवचन में कई बार आई–दुनियां नहीं मानेगी, मानव नहीं मानेगा पर आपको प्रभु मिले है तो आप तो मानो। मन, बुद्धि, चित्त, शंका के दायरे को छोड़कर मानव स्वरूप में मिले प्रगट प्रभु को पहचान लो, तो भगवान भक्त के वश में ही हैं। कोई कठिन तप, व्रत, उपासना नहीं केवल संतों की स्मृति सहित भजन। बाहरी पूजा, दिखावा आडम्बर छोड़कर अन्तर पूजा करो। चलते-फिरते, उठते-बैठते, हँसते-बोलते, सोते नौकार मंत्र का जाप अवश्य करो ही। किसी की ईर्ष्या मत करो। दिल की सच्चाई, मन की प्रमाणिकता से मीरा, गोपीजनों जैसा खुला अंतराय रहित संबंध संत के साथ दृढ़ कर लो। हम अपनी ताकत से दरिया नहीं तैर सकते। तैरने के लिए steamer चाहिए ही। अन्तर से प्रार्थना करो–हे प्रभु ! मैं आपका बालक हूँ। मैं गुनाहगार हूँ। मेरे अन्दर सब भरा है पर आप समर्थ हो तो मुझे माफ कर देना। मेरा शुद्धिकरण आप कर देना। मेरे हित जोहो वह आप कर देना।

तूँ ही आकारा तूँ ही आधारा।

सत्पुरुष का जन्म, कर्म, दिव्य मानना ही।

प.पू. काकाजी ने कहा आप माता, महादेव, हनुमान, राम, कृष्ण, जीसस किसी को भी मानो पर दिल की सच्चाई से मानो जो आपको धरती पर ही अक्षरधाम का सुख शान्ति आनन्द दे सकें। जगरांव में प.पू. काकाजी और संतों प.भ. बलवन्तसिंह पंडित जी एवं प.भ. झाँझी साहब के निवास स्थान पर दो दिन ठहरे। यह परिवारों प.पू. काकाजी के प्रथम बार ही करीब आये थे पर उन्हों अपना सर्वस्व जैसे सौंप दिया....सारा दिन भक्तों का खाना-पीना, चाय नाश्ता इत्यादि चलता तो भी महिमा से केवल सेवा ही ! प.पू. काकाजी इतने अधिक राजी हुए कि आशीर्वाद उनके दिल से फिसल गए....'पंडितजी का घर मन्दिर हो गया–तीर्थ स्थान हो गया। प्रभु खूब सुख, शान्ति, आनन्द देगा।' प.भ. दर्शनलाल जैन जी के यहां भी एक सभा हुई। जैसे घर में शादी में हलचल की चहल पहल होती ठीक वैसी ही दिखाई पड़ती थी। प.पू. काकाजी ने वहाँ

महापूजा की और उनके सारे परिवार को खूब सुखी होने का अन्तर से आशीर्वाद दिया।

दो दिन जगरांव के हरिभक्तों को आनन्द के सागर में तैरते छोड़कर प.पू. काकाजी मोगा प.भ. बिहारीलाजी के घर पहुँचे....प.भ. बिहारीलाल जी के परिवार की प.पू. काकाजी के प्रति सेवा अनोखी थी। कोई अपेक्षा नहीं, समस्या भी नहीं। केवल प्रगट प्रभु के पधाने से आनन्द ! मोगा में प.भ. बिहारीलाजी, प.भ. हकीम परसरामजी, प.भ. जुगलकिशोरजी, प.भ. दासभाई, प.भ. हीरालालजी, मैडम इन्दिरा आंटी सभी ने अपने प्रेम में जैसे प.पू. काकाजी को बाँध लिया। 3rd दिसम्बर की शाम को इन्दिरा आंटी के यहाँ सत्संग की सभा का आयोजन था....प.पू. काकाजी जैसे अबकी बार मौज लूटा देने ही बैठे थे उन्होंने कहा किसी को भी कोई तकलीफ हो, उदासी हो तो प्रभु के पास प्रभु के जीवंत संत के पास प्रार्थना ही करो सब जिम्मेदारी भगवान की है ही; पर आप सब दिल से प्रभु के प्रगटपन को नहीं मानते। अपनी मान्यता को नहीं छोड़ते। मन के ही शिकंजे में ही फँसे रहते हो इसलिए ही प्रभु की ओर से आई शान्ति, सुख, आनन्द, करुणा को अनुभव नहीं कर पाते। मोगा में प.भ. दासभाई के यहाँ प.पू. काकाजी ने महापूजा करवाई। महापूजा में बैठे हरेक व्यक्ति को प.पू. काकाजी के चेहरे पर अनोखी ही आभा दिखाई पड़ती थी। प.पू. काकाजी ने सभी को जल देकर संकल्प कराया और कहा कि अगर तुम सच में प्रभु की सर्वोपरि, सार्वभौम सत्ता को मानते हो तो सूर्य के रथ में अन्धकार कैसे हो सकता है? प्रधानमंत्री के लड़के-लड़की को किसीका डर कैसे हो सकता है। तो सर्वप्रथम पक्का मानो कि आपको समर्थ सारथी राम, कृष्ण, जीसस जैसे मिले है और वह आपका अहित कभी नहीं होने देंगे। अन्त में उन्होंने कहा कि 25th जन. गुणातीतानन्द द्विशताब्दी महोत्सव तक तो मेरे कहे अनुसार अगर चलो तो आपकी हर समस्या का समाधान प्रभु कर देगा। भगवान आप सभी को परम सुखिया करे।

शुभम् भवतु। मंगलम् भवतु।

मोगा से 4th दिस. की सुबह 10-00 बजे सभी आनन्द विभोर हुए हरिभक्तों से विदाई लेकर प.पू. काकाजी, संतों व बहनों सवद्दी पहुँचे....सवद्दी में प.भ. दिलीपचन्द जी, प.भ. बलवन्तसिंहजी, प.भ. मदनलालजी, प.भ. जमनादास जी, प.भ. शास्त्रीजी, प.भ. शक्तिजी व सभी हरिभक्तों को लगभग डेढ़ घंटा आनन्द कराकर प.पू. काकाजी श्री नम्बरदारजी के यहाँ पहुँचे। नम्बरदारजी के परिवार की भावना का वर्णन कैसे करें? प.पू. काकाजी ने शायद इस परिवार को सुबह 8-00 बजे तक झमट पहुँचने का समय दिया था। लेकिन मोगा सवद्दी में लेट होने के कारण सब करीब 12-30 बजे झमट पहुँचे। पर इस परिवार के सदस्यों के चेहरे पर तनिक भी शिकायत नहीं–बस अहोभाव ! प्रभु कहां से अपने घर पर? यह परिवार सुबह 4-00 बजे से प.पू. काकाजी संतों व हरिभक्तों के नाश्ते की तैयारी में लगा था। वहां सभी ने पंजाब की मुख्य चीजें मैथी की रोटी मक्का वाली, मक्खन के साथ खाई। सादगी प्रेम की निश्चलता तो देखते ही बनती थी।

झमट से निकलकर प.पू. काकाजी और सभी हरिभक्त लुधियाना में पू. उत्तमस्वामी की निश्रा में बने नए अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मन्दिर दर्शन करने गये। प.पू. काकाजी ने यहाँ

भजन कराया। वहाँ पू. उत्तमस्वामिजी से मिलकर खूब आनन्द व्यक्त किया। मन्दिर से निकलकर सभी लुधियाना में प.भ. अमृतसागरजी के यहां खाना खाने गये। इस परिवार ने भी पहली बार ही प.पू. काकाजी के दर्शन किये थे....पर उनकी खुशी जैसे समाती न थी। करीब एक घंटा वहां रुककर सभी ने प्रसाद ग्रहण किया।

यह परिवार केवल प.पू. काकाजी के दर्शन से ही इतना अधिक भावुक हो गया कि अहो! अपना कैसा अहोभाग्य! प.भ. अमृतसागरजी की Mrs. को दिल्ली आई बहनों ने कहा कि लाओ हम बर्तन साफ कर दें ताकि जल्दी सब खाना खा लें। पर उनकी Mrs. का जवाब सुनकर सब सन्न हो गये...उनकी Mrs. ने कहा कि रोज बर्तन साफ करने महरी आती है पर मैंने आज उसे आने को मना करी कि मुझे ऐसे भक्तों की झूठी थाली साफ करने का सौभाग्य कहां से? कैसी महिमा?

इस प्रकार सब आनन्द करते-करते दिल्ली वापिस आने लुधियाना से रवाना हुए....लुधियाना जगरांव, मोगा, सवद्दी, झमट के सभी हरिभक्तों को सेवा के लिए हार्दिक धन्यवाद!

स्वामी की बातें

61. छोटे बच्चे को जब किसी चीज से डर लगता है तो वह अपने मां बाप के गले लग जाता है, वैसे ही अगर अपने को कोई भी दुःख आये तो भगवान का भजन करना, स्तुति करना। भगवान रक्षा करेंगे ही। प्र.-1,319

62. भगवान के लिए हमने जो-जो किया है वह सब वे जानते हैं। जिसकी गोद में सिर रख दिया है वे निश्चित रक्षा करेंगे और हमारी तो भगवान खूब मान लेते हैं। प्र.-1, 331

63. एक रुचि वाले दो ही भक्त हों तो समझना लाखों हजारों के बराबर हैं पर बिना एक रुचि वाले लाखों व हजारों हों तो भी हम अकेले ही हैं यू समझना। प्र. 1,336

64. भगवान को अपने भक्त को कुछ भी करके ब्रह्मरूप करना है। प्र.-1, 337

65. 'पूर्व-संस्कार' शब्द प्रचलित है। यह 'पूर्व संस्कार' अर्थात् 'पूर्व जन्म' में जो कर्म किया इसका 'संस्कार' है ऐसा नहीं समझना। आज की क्रिया कल की दृष्टि से पूर्वसंस्कार है। हमें बड़े संत का समागम हुआ वह आज बहुत बड़ा 'पूर्वसंस्कार' हुआ। प्र-1, 339

❋ ❋ ❋

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	7.1.86	मंगलवार	सफला एकादशी, व्रत
2.	दि.	14.1.86	मंगलवार	मकरसंक्रान्ति
3.	दि.	19.1.86	रविवार	नौमी, श्री हरिजयंती
4.	दि.	21.1.86	मंगलवार	एकादशी, व्रत
5.	दि.	25.1.86	शनिवार	मू.अ.मू. गुणातीतानन्दस्वामी दीक्षा दिन। सोखड़ा में गुणातीत द्विशताब्दी महोत्सव।

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P., Printers, shahadra, Delhi-110 032